

निवद ७ ॥ पुनस्तु इयमिषकावादिबहु यविनिश्चयनयविष्णुच
 लुमस्तुलनावयग ॥ तत्सध्याह्वाकालतत्यविनर्तवदन्नतगतकान्त
 वीजविनाजिगीविचिन्त्यमनमनुय ० नरुकार्यकुश्याग ॥ उवदगुद्धा
 मवधममावदगुद्धा ॥ वदो ॥ ततस्तेनद्वजयस्मिनिश्चयन सव
 तशमगतविपनिश्चायासस्रलोकधायुषसत्वाथहावापुनः सैह
 तयुवयवयमनुकार्यकुश्या ॥ उवदमानाह्वाविति ॥ सवत
 कलमम्युष्टः सत्वाथैकयवक्त ॥ ४ ॥ निमस्यषडुर्जैव चना

कालामालानकशक्तिः ॥ आलीहमुदितावद्ध ॥ विपुत्रकविनासनी ॥ १४ ॥
 नमः कलतालाघात ॥ चलतालाघात ॥ रूकुटीकतेद्रुं काल ॥ सफयाता
 लरुं कनी ॥ १५ ॥ नमः लिशगुशसाक ॥ साकनिवान (मवप्र) खाहा
 ययवुंसीयुद्ध ॥ मदायातकनासनी ॥ १६ ॥ नमः यमुदितावद्ध ॥
 विपुं गपयशं कनी ॥ दण्डकत्रययन्याम ॥ विद्याद्रुं कालदीयिते ॥ १७ ॥
 नमामुत्रमहाधाय ॥ द्रुं कालकानाकालवीजित ॥ मत्रुमलुलकेलाज ॥ उवन
 एयवात्रिली ॥ १८ ॥ नमः सुत्रसनाकाल ॥ रुविनाद्रुकलस्त्रिण ॥

जनादिनुकरु काल ॥ गुल्लषविषनासनी ॥ १९ ॥ नमः सुत्रगल
 (धक) ॥ सुत्रकिन्नलसर्वोत ॥ आवद्धमुदिताशाग ॥ कलिद्रुं सप्रनासनी
 ॥ २० ॥ नमः द्युदार्कसीयुद्ध ॥ नयनयुतितासुत्र ॥ रुदिद्विनुकरुका
 य ॥ विषमकलनासनी ॥ २१ ॥ नमः स्त्रिन्नविनास ॥ निवस
 किसेमन्वित ॥ गुरुवागलज ॥ काय ॥ नमः प्रियवत्रुत्र ॥ २२ ॥
 मूलमर्कमिद्विषार्क ॥ नमः कारिकविनास ॥ गकः यय (०) यत्रताधीमान्
 दयाराकिसेमन्वित ॥ २३ ॥ ॥ स्यायन्वापागनुकाय ॥ स्यत्रसर्वविषय

१४
 दै । सर्वथाययसमन सर्वज्ञानिनामनी ॥ २३ ॥ अतिद्विकशवदुर्लभं ॥
 सकलजिनकाटिनि ॥ अस्मिन्नरुत्वमासाद्य मोक्षबोधयेयुः ॥ २४ ॥
 विषकस्यमहाद्याय स्वेवर्तवार्थजगम ॥ सल्लयलर्ययानि खादित
 पीतनव ॥ २५ ॥ गुरुद्वलविषकानी यत्रमनुविनामनी ॥ अनेवविवस
 त्वानी ॥ दितिसफातिवार्त्तमा ॥ २६ ॥ पुणकामालरत्नूरु ॥ धनकाः
 मालरत्नूरु ॥ सर्वकामाप्रवाप्राति ॥ नविद्येयतिरुन्यत ॥ २७ ॥ ॥ ॥
 कविशक्तिफारुसमाफ ॥ ॥ वदद्यञ्जसमृदा ॥ निरुतायतकुर्व

पद्मयार्त्तवार्त्त ॥ विनालकालमर्क ॥ लिपयल्लयल काधण्ड्य
 लाण ॥ नाथामिहामनम ॥ खमिवसेवविन ॥ कुरव्यासु ॥ गमरा ॥ श्री
 मञ्जुनाथिवाक ॥ विरुवननमिती ॥ पाठ्यागमभवव ॥ ध्यागममेत
 याग्रासुवादि ॥ ॥ नीलन्यवत ॥ उल्यदरुणिमुखी ॥ गृगमय
 मूलाननः ॥ के ॥ मयवदुनागरु ॥ मल्लगादुर्लभ ॥ यीनसुनी ॥ खद्वान
 यत्र ॥ मयिगामनिकलाद्य ॥ कयागावलि ॥ श्रीम ॥ कुरा ॥ गमरा ॥ उमी
 निलगा ॥ लान्धवीयादुव ॥ लान्धवीयाग्रासवार्त्त ॥ ॥

अधिगलपुलकाय ॥ क्रियनिर्णयथाय ॥ दृष्टवजलल्लय ॥ धीय
 साम्यवथाय ॥ सदात्रियसमृताय ॥ सत्वकिर्तिरुष ॥ समीनसकलतय ॥ या
 दुवामेशयाय ॥ धर्मेशणीयाग्रासिवाय ॥
 सांरुणीशवसदणी शवविदा नीलपमालायदा ॥ मायूरीमयूना
 सनिविषरुनासुवर्णवर्णवय ॥ श्रीमच्छ्रीतवतीजगद्धितामनानुमीन
 लिसरु ॥ धीयमनेविवाजितायतिमनावकुचरीयादुव ॥ ध्वयेवन
 कायाग्रासिवाय ॥ ॥ श्रीमत्साक्षाद्विनाजयवव

ननिनया ॥ पुष्टयिथुषसिध ॥ सर्वहृदयनमार्ग ॥ धिक्वधितधिया ॥
 ध्यानमाविम्वकाय ॥ गमकाप्रकोदिमुका ॥ निमित्तविलहिता ॥ ग्रायस
 लायिनुया ॥ यद्धायानमिगाया ॥ सकलजनहितायादुवावृद्धमाता
 ॥ ध्वयद्धायानमिताग्रासिवाय ॥ ॥ सत्वाविष्टनि
 रुकि ॥ यतिदिनजगता ॥ क्लेशविह्वल्यदका ॥ शाखाशरीरवर्णविधि
 नगरुलया ॥ गत्वतष्टुनानुया ॥ संवृथासवन्नुया ॥ सकलजनहिता
 इत्यमैकानध्याना ॥ समंवा नित्यकाली ॥ विह्वननमिती ॥ यादुवायव

१५२
 वक्रा ॥ ध्वयैव वक्राया आसिवादि ॥ ० ॥ इतीध्ववती ॥
 शृमानलीकरीयस्यापुगावोदिना ॥ (ने) राग्यवयवायुवगमवगातन्त्री
 सदागिष्ठिनि। यद्यद्यदीकृति सर्ववमुदकनि विनामलि सायध ॥ याया
 द्वावसूक्ष्मलीरागवती दानिदु ४ खायह ॥ ध्वसूक्ष्मवाया आसिवादि ॥
 ॥ यः श्रीमान्समसुवविनीयादावविन्याद्विग
 साक्षात्पुन्यविधानमैगलपुन्रिन्नामोलिसेवविगानि (ने) धाधृतादावजा
 लजदिल (ने) दानियावग ॥ यादादागवान्मूलीध्ववक्रिनायेदिप्यमानाद्य

ति ॥ धमाकर्मिकया आसिवादि ॥ ० ॥ वक्रव्याधिल्लिन्त्या
 सुवमनुजधने प्रशमानोदिताथ ॥ वयथादिगलानाशयमथनकली सर्वनाम
 दिहकि । काकावक्रावक्रगपुतिगिरयहवाध्वसनीध्वसनीया दानिदुवाधि
 मयपुतिदिवससमायाह्वार्यैव वक्रा ॥ ० ॥ वृद्धमिहामनस्क
 उवनाहिकाकली सर्वलिकेकवध ॥ रावारावेकराव पुतिदिननमिरी पू
 न्यसिशावाव । कुलीकाश्चवृदीह स्तुतिकसमनिरी ध्ववयवाधिधव
 पायादावजध्वगु ॥ यत्रमवयवगुने वृद्धलानन्दनाथ ॥ ध्ववेगुरागुयाओ

सिद्धि ॥ ० ॥ उद्यातागलवकानिलधुगाविधुगाराग
 ना ॥ दधनीस्त्रिगीयासेलाक्रमहीगाधियुषधाकायुगा ॥ वृद्धकौनस्तमा
 विलाविकलखस्रानव्यसन्धोरुया ॥ रावागोवविवानेभाविनेरुतघावा
 रिकायाउवडा ॥ ध्रुवदुवालाहयाआसिवाय ॥ ॥
 आलीहातिष्ठमानाकुचगनयुगधरुलवैसतयद्र ॥ आनृदंकातिनायागिडु
 वनेमनरुनामास्त्रगाद्वविद्या ॥ आनद्यापुत्रमानानिद्रूपमसरागैस्त्रविद्या
 गमैग ॥ आवाधायक्रमानजिनउलनमिनेफडवाष्ट्रीसैतभावडाशीम

संननर

मलयाआसिवाय ॥ ० ॥ स्वयवजनयदिशदंनिगावाधिः
 मान ॥ गिडुवनमननाथानित्यसंमानगात्र ॥ प्रकृतिगतनलकाप्नोधि
 यत्रुयास्त्रनूया ॥ मयवकलखरुगायाहुदीर्घकधावडा ॥ श्रीदीर्घकल
 याआसिवाय ॥ ० ॥ थनायायमदाययापणीतायानीतिद्वया
 वसा ॥ दानवायमथामुखनऊरात्रपासायसध्वकत्र ॥ यदीयद्रधियोमुखो
 मुखमृदंरुगावलीलोलेयोनाकल ॥ नान्यनायविवययीनिवजगत्या
 याउलाकेध्रडा ॥ श्रीलाकनाथयाआसिवाय ॥ ॥

निर्मानाद्यदिनकमलुलगाकाद्यादिवल्लुवृणा यावकांतीकालाकाल
नमृगसवासुभ्राकुसुमायमा । विद्यावृद्धवर्क्यदृतिथावकुपुयाभंयनि
स्नानन्यसन्दोरुमाशावातावविद्यालनेविबहितावालाहिकावंधसि॥
॥ वृद्धवालाहियाभ्रासिवादि॥ ॥ यविद्धतायविकन्य
धर्मकायनिमाहु । निन्यममुखयाण वानुसैशागकाय । कुवनकुरुत
विधाना २ यम्यनिमालिकोय ॥ सखवउरागवानुणीयणीवजसख॥ ॥
वृद्धसखयाभ्रासिवादि॥ ॥ आयवृद्धियल्लवृद्धि ॥

वृद्धियकामुखसुथ । धनसन्तानवृद्धिबहु सन्तानसकवृद्धिबहु ॥ ० ॥
२ नागमना॥ ॥ तालमाथ ॥ ॥ लागारुवलाकियात्रिभसखवधवयिकवायि
वर्तमा २ उमवायकैमदियासुमानमककैगदिगवना ॥ वप्रमाववसम
२ अकानयतलवस अयनिसु जिनेसुव शाकावेप्रवाजसु यथावाकम्यतिमि
॥ ॥
२ उजम॥ ॥ वृद्धवाकादीय ॥ धनहीसिन्धुसूद पूजा ॥ जाय ॥ उजाहं वज
वैलाचनीकं २ २ स्त्राहा॥ ॥ धनधूम ॥ ॥ रगवृद्धीमगही २ वजआमिह्वी
रादानकसु नाथनाय ॥ मगुर्नैकलुधामकासिकोनामनैकं पायः २ अमाकं
यूजनायनगम्य २ प्रवनस्य २ प्रवनयसादकेसककेसिकासिमे

वा॥ धि साचना साचना सखरु लना नृधम सरु लंडं म सरु डी विवेंद्र
 समयय मय देवानां वृद्धानां त्रिविहानां श्रीनाथनाथवज्र भवनि श्री
 गयामय हं ॥ ० ॥ धनलिखाननाय ॥ उ वं वज्र वा लादीय नम सादा ॥
 उं हां था यामिनीय नम सादा ॥ डीं डीं सक्तु मि नित्य नम सादा ॥ डीं भां दिनीय न
 म सादा ॥ रुट रुट रुट रुट काय वज्र युगं परिच्छ सादा ॥ य य स य दालयु जाक्ष ॥ ० ॥
 शुभना के ले भ म मा वि भा ठु के सा रा वज्र का विग क त्या गि रे डे न म रु
 मणी वज्र या गि ॥ ० ॥ उ या गा न लय क मा निलयु मा या दि ४ दि सु ल री क

(Faint bleed-through text from the reverse side of the page)

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मंडिता कना ॥ त्रिनवलमकुठा ॥ जन्मना
वज्रसुत ॥ मेगिलावदयानि ॥ सुखव वनयकता ॥ त्राहता ॥ दृष्टया
रा ॥ वृक्षवेत्रावनोद्यः ॥ गिरव नूनैमिगः ॥ कंदनिस्य वज्रवो ॥ उद्यम
वाथसिद्धिः ॥ विमत्रसूमत्रसूमर्गत्रंवाडिसुत ॥ १ ॥ दृष्टादकस्तवता
यष्टुपगिदमका ॥ वडाव न्मरुहमा ॥ यिगाहाराहतागमा ॥ त्रिपू
गानमथना ॥ पाकिला ॥ आमहामा ॥ अक्षयत्रनकेदु ॥ यगिनिन
मचत्रा ॥ गवहसीयोमाडा ॥ उद्यमसवाथसिद्धि ॥ २ ॥ सद्यगिलाक

व ॥ अगुलगननितया ॥ वाधाविक्रमविक्र ॥ वो ॥ अद्यावन्दसिद्धा
विक्रिगाकलिमला ॥ हनुकानीद्रुतु ॥ व ॥ अद्योत्रेन्द्रगता ॥ विद्रीगदिन
गुन्म ॥ सर्वसुखानुकम्पा ॥ उद्यमसवाथसिद्धा ॥ ३ ॥ यल्लवृणवगा
ला ॥ पादनविरकुटि ॥ लूनसंरात्रला ॥ मा ॥ त्रिचिमालमाल ॥ म
कलएप्रहृ ॥ यीगव न्मगिवका ॥ मा ॥ त्रिमामकि ॥ रुधियाड
त्रिपूगाना ॥ पाठुतात्राचवाद्या ॥ उद्यमसवाथसिद्धी ॥ ४ ॥ गन्ध
त्रिगा ॥ गुनीव ॥ रडाकाकलीना ॥ खवर्ज ॥ पा ॥ मकु ॥ अ ॥ म

वा नाहिवडाहया (अ)सि यलशु धरा (धम्म) धागध्वनिच (क)यूनी
 स्नानके (उ) धननिहिकला (र)वर्जसासवनिच (दु)यसुवाथसिधि
 ॥४॥ वेया मालासूगीगाः यथिगाजिनवतः सावनीधूय
 वजाः वेगा प्रिगधेवजाः यहसितावदनाः सीगीगाज्यादगा
 गाः लेथिबुदस्यवा (की) सकलरयहगाः सात्रधिदियव
 ज (उ)यसवधूसीधि ॥५॥ वेगमल्याधम्मचक्रः यथिगा
 जिनवतः यवगीगुधकुठः गभवल्यात्रयिनिचः क्रिगा

आशा अरुणाय

ASHA ARCHIVES

2706

I

ॐ वाम॥ त्रैलोक्यादिवाक्पुंगीरुस्यणविवदध्वानारायणिनयं॥ ॐ
 हुं॥ ॐ हुं वेदकुसुमा॥ ॥ ताः शृणु विविक्तयत॥ स्वदुदयभु
 कावणवन्दमणुलं तत्सध्वं कावणं नानावस्मिनि स्यन्त तत्
 य वस्मिन्तुलनं वदुता दणदि (सकध्वं) सुव स्मिन्तुलनं सत्त्वं सत्त्वं
 मदीकृत्य। यनभुक्तनिष्ठुवन समाणुलं यद्वतादृष्टान आकृष्टं
 त॥ ॐ आकृष्टं गदं॥ ॐ वेदकिण्ड॥ ॐ वेदयागदं॥ ॐ वेदम्यं
 वं॥ ॐ वेदावंगदं॥ ॐ आः पुवलमत्तालायणीयागम घनायमा

[illegible]

2111 2000
2114 2114

22

ॐ तत् सत् ॥ अथ लनाय स्वाहा ॥ ॐ दे अदृष्टा कला तस्वाहा ॥ ॐ वृं अथ न धवाय स्वाहा
॥ ॥ कृष्णोदमसावोद ॥ यवेदकर्मसमाप्तिग ॥ कृष्णकन्यावरीग ॥ नन्दो
गीताविनायक ॥ वामसिद्ध्याविरिति ॥ उमायवो गतास्तव ॥ ययाश्च
विजया ॥ श्रेव ॥ अजिता अथवा जिता ॥ शयक ॥ लिमदाकावी ॥ सुलः
कालिमदाकालिमियागिनी ॥ नृन्दि वल्लिद्याविदुष्टि ॥ त्विवको गिदः
॥ ॥ श्वविश ॥ कामाजिनीयिवाचित्य ॥ अमावसिज्यागिनि ॥ धानव
यामदात्रया ॥ दष्टवृथाकयाविनी ॥ कयावमालमातिन्या ॥ षड्गीतय

मदद्विका ॥ खड्गदृष्टाप्रभुदृष्टा ॥ वददृष्टाधनस्तथ ॥ यैवजोकि
नीमदागत ॥ यैवायैवायदातपूजा ॥ ॐ नमः सर्वतथगतमनालेत
विलासनमितेनमामिशगवर्क ॥ ऊहवेद ॥ छिछिछिछि यतीकुक्कसमा
जलिनाथकावदप्रययितीकुस्वाहा ॥ वदप्रययस्वाहा ॥ वदप्रययस्वाहा ॥
वददीयस्वाहा ॥ वदगन्धस्वाहा ॥ वदनव्ययस्वाहा ॥ ॐ वदमत्वर्मगु
गत्मक ॥ वदवर्त्मनकर्त ॥ वदधर्मगनायन ॥ वदकर्मकुशार्कम
॥ ॐ वदलाभ्ययस्वाहा ॥ ॐ प्रगन्धयस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वीनायः

स्वादा ॥ ॐ ह्रीं घृष्याय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं गीताय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं धृष्याय स्वादा ॥
ॐ ह्रीं नृष्याय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं दीपाय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं स्वादा वद ॥ ॐ ह्रीं स्वा
दा घृषु ॥ ॥ माह्वियवदमलाल कनियिमत्व विमाह्व धर्मविमा
ह्व केह्ववदममात्रधवद ॥ ह्वेवदघृषु नलितयालितमव्ववदघृषु
लित ॥ यस्मायायमिगानाथ ॥ माहाविनमव्वमत्वह्वयावताघलिह्व
ह्वेह्वह्व जय स्वादा ॥ नमामुयागमविममत्वमावक ॥ नमामुमव्वमि
कनक ॥ ॥ माहाविनक ॥ नमामुममात्राह्ववमाह्वह्वयक ॥ नमामुगत्वक

नमाम्यह्वमदा ॥ ॥ नमामुह्वनमामिह्वनमानमह्वस्वादा ॥ मनुत
थल ॥ ह्वेकालियवमध्व ॥ ह्वेकालिष्टिह्वताजन ॥ ह्वेकालिह्वतध्व
ह्वेन्य ॥ ह्वेकालिह्वनुमाह्वत ॥ नागमयनैयलम्याथो वहुवाक
वपुव्वम ॥ ॥ जयनयकटुह्व ॥ वद्ववाकनमामिह्व ॥ नमामुह्वनमा
मिह्वनमानमह्वस्वादा ॥ ॐ यवजकिनीयुजायस्मानयात्माननियोगि
यामि ॥ ॐ ह्रीं वावायुयुजायस्मानयात्माननियोगियामि ॥ ॐ सकलम
त्वयनिगानाथ यात्माननियोगियामि ॥ समयस्त्वममयह्व ॥ ॐ गतवत्त

नृयणवलादिकीकृत्या ॥ वृद्धधर्मसमर्पय नवर्णगच्छामि नित्यमम
 मियानम्यहि सर्वेषां यागगुणादिशक्तिनी ॥ वीतवीर्यध्ववीर्यवी
 वीविमत्तामदात्मक ॥ विष्णुयणगुणावाय ॥ सवर्णगच्छामि नित्य
 मम ॥ समन्वाहवल्गुमासर्व वेवावनाकायवत्तायलायामाद्य
 सिद्धिप्रमृखाऽसर्ववृद्धवाविमत्ता अहंभ्रमकनामा ॥ मविता
 मयादाय यावदावाविमलुनिषलुना ॥ उत्यादयामियवम वावि
 विरुमनरुर्व ॥ यथाश्रियाश्रिकानाथ संधाधिकागनिधयाऽश्रिवि

धालिप्रसिद्धाव कुशालधर्मसंगच्छ ॥ सत्वाथकियाणीत सति
 गृह्णाम्यहंहरि वृद्धधर्मसमर्पय गिरतागमनरुर्व ॥ अथागल
 गृहीकामि सध्वर्ववृद्धयागज ॥ वदद्यष्टाकमृदाक यतिः
 गृह्णामिगवरा आचोयवगृहीष्यामि मदावदकृपाव्रय
 वंदुहानपदास्यामि वदुत्वाहदिनदिन ॥ मदावनेकुले
 याग समथवमभावम ॥ सधर्मयतिगृह्णामि वायिगु
 श्रुतियानिक ॥ मदायदकुलंशुद्ध मदावाविममूहव ॥ सर्व

सर्वसंयुक्तं यतिगुणामिसर्वतः॥ पूजाकर्मयथाशक्ता
 मदाकर्मकृत्वाय। उत्यादयामियवर्म वाधिविक्रमनृकृतं
 ॥ गृहीत्वामसुवैकृतं सर्वसत्त्वाथकावना७। अतीत्युगावयि
 कामि अमुकामावयाम्यहं॥ अनास्वस्वनास्वामयिकामि
 सत्त्वास्वययिकामिनिवृत्ता॥ ततःसमाधिमृदाव्यवस्थिता नोसा
 गृहीत्वैवदुष्टिर्द्वैकार्यं गतस्मिमाविर्गणीयदुरुनात्मकं सर्व
 लोकिधार्द्वं निताराणां कृताविजमाणावसर्पविराच्य॥ उस्वरा

वहुधासर्वधर्माः स्वरावहुधाः॥ इतिमलमन्त्रार्थं सर्वध
 र्मतेनात्ममविर्मयः॥ तताधर्मकायनिव्यन्दीकृत धर्ममैता
 गकाय मूल्यायेयिदु मृदाशकिन्यादिरिष्टत रुतिधवर्गी
 (धायमानमात्मानंरावयः॥ अनन॥ अजजजजवदसत्त्व अवता
 वृणमिद्विमरु॥ रुरु रुरु रुकातनाथ समयाहमरु नेमि
 तं॥ वदसुःरुष्टागति धरुधर्म॥ अजुअजुअजुअमताय व
 दजुलिमकमलीयनरु॥ ततश्चन्यवाकावमिराच्य॥ ह्योनाहमि